सभी प्रकार की सरकारी सहायताओं से मुक्त, खोजी पत्रकारिता का तेज बढ़ता अखबार

दैनिक

themovementofindia.in

द मूवमेंट ऑफ़ इंडिया

RNI No. RAJHIN/2012/48876
पोस्टल पंजीयन न. भीलवाड़ा / 2025-2027

खोजी खबरें-तेज नजरें

प्रेरणा स्रोत - स्व. चुन्नीलाल सालवी

ये अखबार ही नहीं क्रांति का अभियान है। मानवत्ता एवं लोकतंत्र का सजग प्रहरी, ये दुष्टों की मौत का सामान है।

वर्ष - 14 अंक -40 | 05 अगस्त 2025,मंगलवार | संपादक - दयाराम दिव्य | सहसंपादक - चाहत सालवी | मूल्य - 2 रू.

उत्तराखंड के धराली में बादल फटा, पूरा गांव जमींदोज:पहाड़ से पानी और मलबा आया

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

उत्तराखंड के धराली में बादल फटने से खीर गंगा गांव बह गया है। घटना मंगलवार दोपहर 1.45 बजे की है। घटना के कई वीडियो और फोटोज सामने आए हैं। इनमें दिख रहा है कि पहाड़ी से बारिश का पानी और मलबा आया और 34 सेकेंड में पूरा गांव बहा ले गया।

उत्तरकाशी के डीएम प्रशांत आर्या ने बताया कि अब तक 4 लोगों की मौत की खबर मिली है। 50 से ज्यादा लोग लापता हैं। कई लोगों के

दबे होने की खबर है। धरावी गांव देहरादून से 218 किमी दूर है। गंगोत्री धाम से 18 किमी दूर है। रेस्क्यू टीम स्ष्ठक्रस्न, ह्रष्ठक्रस्न के साथ आर्मी भी मौके पर पहुंच गई है।

पानी का सैलाब देख लोग चीखने लगे

पानी का सैलाब गांव की तरफ आते ही लोगों में चीख पुकार मच गई। कई होटलों में पानी और मलबा घुस गया है।

धराली बाजार पूरी तरह तबाह हो गया है। कई होटल दुकानें ध्वस्त हो चुकी हैं। यहां पिछले 2 दिनों से भारी बारिश हो रही है। सीएम धामी ने कहा कि हम हालातों पर नजर बनाए हुए हैं।

प्रियंका बोलीं- जज तय नहीं करेंगे कौन सच्चा भारतीय

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने मंगलवार को संसद परिसर में कहा, माननीय जजों का पूरा सम्मान रखते हुए मैं ये कहना चाहती हूं कि वे यह तय नहीं करेंगे कि सच्चा भारतीय कौन है।

उन्होंने कहा, सरकार से सवाल पूछना विपक्ष के नेता का कर्तव्य है। मेरा भाई कभी भी सेना के खिलाफ नहीं बोलेगा, उनके प्रति सम्मान रखता है। भाई की बातों का गलत मतलब निकाला गया।

इधर, संसद भवन में NDA संसदीय दल की बैठक में पीएम मोदी ने इसी मुद्दे पर कहा, सुप्रीम कोर्ट की इससे बड़ी फटकार हो ही नहीं सकती।

दरअसल, प्रियंका का ये जवाब सुप्रीम कोर्ट के राहुल के सच्चे

भारतीय% होने पर उठाए सवाल पर आया। 4 अगस्त को कांग्रेस नेता राहुल गांधी की सेना पर की गई टिप्पणी मामले पर सुनवाई के दौरान स्ष्ट ने नाराजगी जताई थी। कोर्ट ने कहा था कि सच्चा भारतीय ऐसा नहीं कहेगा। आपको कैसे पता चला कि चीन ने भारत की 2000 वर्ग किलोमीटर जमीन पर कब्जा कर लिया है।

16 दिसंबर 2022 को भारत जोड़ो यात्रा के दौरान राहुल ने विवादित बयान दिया था। कहा था- लोग भारत जोड़ो यात्रा के बारे में पूछेंगे, लेकिन चीन ने 2000 वर्ग किमी भारतीय जमीन कब्जा की है, 20 भारतीय सैनिक मारे गए और हमारे सैनिकों को अरुणाचल में पीटा जा रहा है, उसके बारे में बात नहीं कर रहे हैं।

इस पूरे मामले को 2 पॉइंट्स में समझिए

4 अगस्त- सुप्रीम कोर्ट ने कहा- ये बातें संसद में क्यों नहीं कहते

सेना पर दिए बयान से जुड़ी राहुल की याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने कहा था- आप विपक्ष के नेता हैं। ये बातें संसद में क्यों नहीं कहते। सोशल मीडिया की क्या जरूरत है? कैसे पता चला कि चीन ने 2000 वर्ग किमी क्षेत्र कब्जा लिया। क्या आप वहां थे। कोई प्रमाण है। हालांकि इस केस में लखनऊ की अदालत में उनके खिलाफ शुरू की गई कार्यवाही पर सुप्रीम कोर्ट ने रोक लगा दी। जस्टिस दीपांकर दत्ता और जस्टिस एजी मसीह की बेंच ने यूपी सरकार और शिकायतकर्ता से तीन हफ्ते में जवाब मांगा है।

जयपुर में सचिन पायलट पर वाटर कैनन चलाई: NSUI के राष्ट्रीय अध्यक्ष का मोबाइल चोरी

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

राजस्थान में छात्रसंघ चुनाव की मांग को लेकर मंगलवार को हस्ङ्क ने जयपुर में प्रदर्शन किया। शहीद स्मारक पर छात्र सभा में कांग्रेस के राष्ट्रीय महासचिव सचिन पायलट समेत पार्टी के कई नेता पहुंचे।

NSUI कार्यकर्ताओं ने सीएम आवास का घेराव करने के लिए आगे बढ़ने की कोशिश की। पुलिस ने उन्हें रोकने के लिए पानी की बौछार की। पायलट पर भी वाटर कैनन चलाई। पुलिस और हस्ङ्क कार्यकर्ताओं के बीच हल्की धक्का-मुक्की हुई

पुलिस ने लाडनूं विधायक मुकेश भाकर, हस्ङ्क प्रदेश अध्यक्ष विनोद जाखड़ समेत 36 से ज्यादा कार्यकर्ताओं को हिरासत में लिया। प्रदर्शन के दौरान हस्ङ्क के राष्ट्रीय अध्यक्ष वरुण चौधरी का मोबाइल फोन चोरी हो गया।

सभा में पायलट ने कहा- पता नहीं कौन मुख्यमंत्री को सलाह दे रहा है। ग्रामीण इलाकों में विकास रुक चुका है। चुनाव रोकने के लिए न जाने कौनसा सलाहकार बता रहा है। यह सरकार सिर्फ सत्ता में

बैठकर मजा लेना चाहती है। कोई भी चुनाव नहीं कराना चाहती है।

विधायक अभिमन्यु पूनिया ने कहा- आज एक भी छात्र पर मुकदमा लगाया गया तो कांग्रेस पार्टी इसका करारा जवाब देगी। हम हर कीमत पर छात्रसंघ चुनाव बहाल करा कर ही दम लेंगे।

बाइक की टक्कर से स्कूटी सवार युवक की मौत:पीएनटी चौराहे के पास तेज रफ्तार में मारी टक्कर

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा में प्रताप नगर थाना क्षेत्र के पीएनटी चौराहे के समीप एक तेज रफ्तार बाइक की टक्कर से स्कूटी सवार युवक की मौत हो गई। युवक की मौत से परिजनों में मातम छा गया। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम करवाकर परिजनों के सुपुर्द कर जांच शुरू करी।

प्रताप नगर थाने के दीवान जानकी लाल ने बताया कि थाना क्षेत्र के नया बापूनगर में रहने वाले जितेंद्र सिंह 34 पिता श्याम सिंह गहलोत सोमवार मंगलवार की मध्यरात्रि करीब 12 से 1 बजे के बीच अपने दोस्त के यहां खाना खा कर स्कूटी से अपने घर जा रहे थे। इसी दौरान पीएनटी चौराहे और बापूनगर के बीच एक तेज रफ्तार बाइक ने टक्कर मार दी। हादसे में स्कूटी सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया, घायल को इलाज के लिए जिला अस्पताल लाया गया, जहां ड्यूटी डॉक्टर ने मृत घोषित कर दिया।थाना पुलिस ने मंगलवार को जिला अस्पताल की मॉर्च्युरी पहुंचकर परिजनों की मौजूदगी में पोस्टमॉर्टम करवाकर शव परिजनों को सुपुर्द कर दिया। पुलिस ने परिजनों की रिपोर्ट के आधार पर बाइक सवार के खिलाफ मामला दर्ज कर जांच शुरू की।

जयपुर में लेबर इंस्पेक्टर की हत्या: घर पहुंचते ही साले ने दागी 7 गोलियां

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

जयपुर की शांत सुबह अचानक गोलियों की आवाज से दहल उठी। मोहल्ले में लोग अखबार और चाय की चुस्कियों में व्यस्त थे, लेकिन उसी वक्त एक घर के बाहर मौत घात लगाकर बैठी थी। वो सुबह आम नहीं थी, क्योंकि उस दिन रिश्तों की रगों में नफरत का ज़हर दौड़ चुका था। और कुछ ही पलों में, एक राइफल की ट्रिगर पर रखी उंगली ने पूरे शहर को चौंका दिया। ये कहानी है इंस्पेक्टर शंकर लाल बलाई की एक जिम्मेदार अफसर, जो हर दिन की तरह उस सुबह भी मॉर्निंग वॉक पर निकले थे। लेकिन उन्हें नहीं पता था कि लौटते ही उनका स्वागत गोलियों से किया जाएगा। दरअसल, बगरू के जिस घर में वो रहते थे, उसी के बाहर उनका साला अजय कटारिया पहले से छिपा बैठा था। आंखों में जलन, सीने में बदले की आग और हाथ में थी सरकारी राइफल। अजय ऋ्रष्ट की 12वीं बटालियन में जवान था, लेकिन उस सुबह वो कानून का रक्षक नहीं, बल्कि खुद कानून तोड़ने वाला बन चुका था। शंकरलाल जैसे ही घर के गेट पर पहुंचे, अजय ने बिना कुछ कहे एक के बाद एक सात गोलियां चला दीं। हर गोली जैसे बदले की एक चिट्ठी थी पिछली कहानी के अधूरे पन्ने, जिन्हें अजय अब खून से लिखना चाहता था। इंस्पेक्टर शंकरलाल जमीन पर गिरे और वहीं उनकी सांसें हमेशा के लिए थम गईं। लोगों को जब तक कुछ समझ आता, अजय वहां से जा चुका था। लेकिन उसने भागने की कोशिश नहीं की। वो सीधे फुलेरा थाने पहुंचा, राइफल पुलिस के हवाले की और बोला मार दिया मैंने।

C M Y K

सम्पादकीय

भारतीय वस्तुओं की मांग

अमेरिका की ओर से भारत पर पच्चीस फीसद शुल्क लगाने की घोषणा ने न केवल भारतीय निर्यातकों की चिंता बढ़ा दी है, बल्कि इससे भारत और अमेरिका के बीच प्रस्तावित द्विपक्षीय व्यापार समझौते को लेकर भी अनिश्चितताएं पैदा हो गई हैं। स्वाभाविक है कि इससे दोनों देशों को होने वाले नफा-नुकसान को लेकर विभिन्न स्तर पर आकलन भी शुरू हो गया है। इसमें दोराय नहीं कि अमेरिका के इस फैसले के पीछे भू-राजनीतिक परिदृश्य से भारत पर दबाव बनाने की रणनीति भी शामिल है, लेकिन इस संभावना से भी इनकार नहीं किया जा सकता कि इसका कुछ असर अमेरिका को खुद भी झेलना पड़ सकता है।

सवाल यह है कि भारत इस स्थिति से किस तरह निपटेगा? भारतीय निर्यातकों की चिंता भी वाजिब है, क्योंकि अमेरिकी शुल्क से भारत के निर्यात पर असर पड़ सकता है और अगर ऐसा हुआ तो उनका कारोबार प्रभावित होगा। यही वजह है कि वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री के साथ बैठक में निर्यातकों ने सरकार से वित्तीय सहायता और किफायती ऋण की मांग की है। बैठक में निर्यातकों ने इस बात पर जोर दिया कि भारत में ऋण पर ब्याज दरें आठ से बारह फीसद या उससे भी अधिक होती हैं। जबकि प्रतिस्पर्धी देशों में ब्याज दर बहुत कम है। जैसे, चीन में केंद्रीय बैंक की दर 3.1 फीसद, मलेशिया में तीन, थाईलैंड में दो और वियतनाम में 4.5 फीसद है। साथ ही कहा गया कि अमेरिकी खरीदारों ने मांग को रद्द करना या रोककर रखना शुरू कर दिया है। ऐसे में अगर आने वाले दिनों में भारत के निर्यात कारोबार में बड़े स्तर पर गिरावट आई तो इस क्षेत्र में रोजगार के अवसर कम होने लगेंगे। यों सरकार ने अमेरिकी शुल्क से पैदा होने वाली संभावित दिक्कतों से निपटने की तैयारी शुरू कर दी है। वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री के साथ निर्यातकों की बैठक इन्हीं तैयारियों का हिस्सा है।

प्रधान संपादक - दयाराम दिव्य

वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा का भाजपाइयों ने किया भव्य स्वागत एवं अभिनंदन

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा । राजस्थान सरकार में वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा के भीलवाड़ा आगमन पर स्थानीय सर्किट हाउस में भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा के नेतृत्व एवं विधायक गोपीचंद मीणा, उदयलाल भडाना, महापौर राकेश पाठक, एक पेड़ मां के नाम अभियान के जिला संयोजक पूर्व विधायक विट्ठल शंकर अवस्थी के सानिध्य में भव्य स्वागत एवं अभिनंदन किया गया।

जिला प्रवक्ता अंकुर बोरदिया ने बताया कि वन एवं पर्यावरण मंत्री संजय शर्मा ने कार्यकर्ताओं का परिचय लेकर उन्हें संबोधित करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक पेड़ मां के नाम लगाने के आह्वान पर राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने इस वर्ष 10 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा है। इसी के तहत गत 27 जुलाई को राज्य स्तरीय कार्यक्रम के तहत प्रदेश के सभी सरकारी विभागों, स्वयंसेवी संगठनों, एनजीओ, राजनैतिक पार्टियों सहित आमजन द्वारा 2 करोड़ 51 लाख पौधों का रोपण किया गया और अब तक कुल 7 करोड़ 51 लाख पौधों का रोपण किया जा चुका है। उन्होंने प्रदेश की 7 करोड़ जनता से अपने जन्मदिन पर एक पौधा लगाने और उसका संरक्षण करने का आह्वान किया। जिलाध्यक्ष प्रशांत मेवाड़ा ने संगठनात्मक गतिविधियों की जानकारी देते हुए एक पेड़ मां के नाम अभियान की गति प्रगति वन एवं पर्यावरण मंत्री के समक्ष रखी।

इस दौरान जिला महामंत्री राजकुमार आंचलिया, प्रहलाद त्रिपाठी, बाबूलाल आचार्य, अविनाश जीनगर, सुरेंद्र सिंह मोटरास, गोपाल तेली, अमित सारस्वत, ललित अग्रवाल, अंकुर बोरदिया, मनोज बुलानी, अजय नौलखा, अजीत केसावत, पूरण डीडवानिया, शंकरलाल जाट, कुलदीप शर्मा, इमरान कायमखानी, मंजू पालीवाल, ऋतुशेखर शर्मा, मुकेश सोनी, नागेन्द्र सिंह, अनिल जैन, मुकेश चेचाणी, सीपी जोशी, अंकित समदानी, भरत सिंह राठौड़, यशोवर्धन सेन, सुमित्रा पोरवाल, मीरा किराड़, सुलक्षणा शर्मा, रेखा शर्मा, मंजू पंचोली सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता उपस्थित थे।

त्रिवेणी संगम से निकली कावड़ यात्रा में उमड़ा श्रद्धा का सैलाब, मुंडला महादेव हनुमानजी का किया अभिषेक

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

बरूंदनी । बैण्ड बाजों , डी जे , मंदसौरी ढोल की आवाज और मस्क बाजों की आध्यात्मिक स्वर लहरियों के मध्य आकर्षक परिधानों में सुसज्जित मंगलगान गाती महिलाओं के साथ नृत्य करते उत्साही युवाओं के समूह के साथ लोकगायक युवराज वैष्णव के शिव शंकर बाबा भोले के भजनों के मनभावन दृश्य से वातावरण उस समय भक्तिमय हो गया, जब मांडलगढ़ विधायक गोपाल खंडेलवाल के नेतृत्व व मुकेश खंडेलवाल के संयोजन में ग्रामीणों के सहयोग से मेवाड़ के हरिद्वार त्रिवेणी संगम से होड़ा होते हुए मुंडला महादेव तक आयोजित विशाल कावड़ यात्रा निकली । इस कावड़ यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालु कावड़ यात्रा में सम्मिलित हुए । प्रातः पंडितों के वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य विधिवत पूजा अर्चना के बाद कावड़ यात्रा प्रारम्भ हुई।

कावड़ यात्रा में भाजपा जिलाध्यक्ष प्रशान्त मेवाड़ा, उप जिला प्रमुख शंकर लाल गुर्जर, मांडलगढ़ प्रधान जितेन्द्र कुमार मूंदड़ा, विधानसभा संयोजक अनिल पारीक, मांडलगढ़ नगर पालिका अध्यक्ष संजय डांगी, जोगणियां माता शक्तिपीठ प्रबन्ध एवं विकास संस्थान अध्यक्ष सत्य नारायण जोशी, बाणमाता शक्तिपीठ प्रबन्ध एवं विकास संस्थान अध्यक्ष अशोक कुमार शर्मा, जिला परिषद सदस्य हरिलाल जाट, पंचायत समिति सदस्य दिलीप सिंह बड़लियास, युवराज सिंह राणावत, धनराज जाट, भाजपा ग्रामीण मण्डल अध्यक्ष श्याम लाल अहीर, बिजौलियां मण्डल अध्यक्ष राजेन्द्र बंजारा, मनोज गोधा, नगर अध्यक्ष अशोक जीनगर, पूर्व अध्यक्ष अर्जुन ब्रह्मभट्ट, पार्षद अनीता सुराणा, वरिष्ठ नेता हरीश भट्ट, गणेश पारीक, श्याम लाल सेन, शैतान सिंह शक्तावत, प्रभु लाल जाट, बरूंदनी प्रशासक गजेन्द्र कुमार साहू, सिंगोली प्रशासक राकेश कुमार आर्य, दौलपुरा प्रशासक रामजस दाधीच, पूर्व सरपंच शोभा लाल जाट, रमेश चन्द्र शर्मा, संदीप सोनी, अनिल कुमार शर्मा, कालू लाल पालीवाल, शंकर खटीक, राधेश्याम सेन, श्याम लाल जाट सहित सैकड़ों व्यक्ति मौजूद रहे।

इस अवसर पर मांडलगढ़ के उपखण्ड अधिकारी मन मोहन शर्मा, पुलिस उप अधीक्षक बाबू लाल विश्नोई, तहसीलदार बसन्त कुमार पाण्डे, मांडलगढ़ थानाधिकारी शंकर सिंह, बीगोद थानाधिकारी जय सुल्तान सहित अन्य अधिकारी भी मौजूद रहे।

कावड़ यात्रा के समापन पर भगवान को भोग लगाकर आए हुए सभी श्रद्धालुओं को महाप्रसाद कराया गया।

टीम भगत सिंह आर्मी द्वारा क्विज़ एवं निबंध प्रतियोगिता का आयोजन

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

सुरज वर्मा

फुलिया कलां में महात्मा गांधी विद्यालय में माय युवा भारत भीलवाड़ा (राज.) युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय भारत सरकार के सानिध्य में टीम भगत सिंह आर्मी के सहयोग से एक पेड़ माँ के नाम कार्यक्रम के दौरान एक क्विज़ एवं निबंध प्रतियोगिता का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में विद्यालय के विभिन्न कक्षाओं के बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।प्रतियोगिता का उद्देश्य बच्चों में देशभक्ति, पर्यावरण जागरूकता और सामाजिक मूल्यों का संचार करना था। क्विज़ में छात्रों ने शानदार जानकारी का प्रदर्शन किया, वहीं निबंध प्रतियोगिता में बच्चों ने अपनी रचनात्मकता और विचारधारा को सुंदर शब्दों में प्रस्तुत किया।

कार्यक्रम के अंत में विजेताओं को पुरस्कार प्रदान किए गए। स्कूल प्रबंधन और टीम भगत सिंह आर्मी ने सभी प्रतिभागियों की सराहना की और भविष्य में भी ऐसे आयोजनों को बढ़ावा देने की बात कही। इस दौरान टीम भगत सिंह आर्मी के सदस्य मौजूद रहे

राज्य सरकार की प्राथमिकता है वन एवं पर्यावरण संरक्षण मंत्री श्री संजय शर्मा"

द मूवमेंट ऑफ इंडिया

भीलवाड़ा । राज्य सरकार वन एवं पर्यावरण संरक्षण के प्रति पूर्णतः प्रतिबद्ध है और इस दिशा में किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। यह बात वन एवं पर्यावरण मंत्री(स्वतंत्र प्रभार) श्री संजय शर्मा ने सोमवार को राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल, भीलवाड़ा के क्षेत्रीय कार्यालय के कॉन्फ्रेंस हॉल में आयोजित विभागीय समीक्षा बैठक में कही।

बैठक में विधायक श्री अशोक कोठारी, विधायक श्री गोपीचंद मीणा, श्री उदयलाल भड़ाना, नगर निगम महापौर श्री राकेश पाठक, जिला कलक्टर जसमीत सिंह संधू जनप्रतिनिधि श्री प्रशांत मेवाड़ा उपस्थित रहें।

जनप्रतिनिधियों ने बैठक में वन एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए सुझाव दिए। उन्होंने जिले में वन क्षेत्र के विस्तार, वृक्षारोपण को जनआंदोलन बनाने, प्लास्टिक प्रदूषण पर सख्ती से नियंत्रण, ग्रामीण क्षेत्रों में जागरूकता अभियान एवं ईको टूरिज्म को प्रोत्साहित करने जैसे महत्वपूर्ण सुझाव दिए।

मंत्री श्री शर्मा ने जनप्रतिनिधियों के सुझावों की सराहना करते हुए अधिकारियों को निर्देश दिए कि सभी बिंदुओं पर त्वरित कार्यवाही सुनिश्चित करें और वन एवं पर्यावरण संरक्षण के लिए समुदाय की भागीदारी को प्राथमिकता दें।

उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि वन क्षेत्र की सुरक्षा, वन्य जीवों के संरक्षण और पर्यावरणीय चुनौतियों से निपटने के लिए हर स्तर पर सजग रहते हुए त्वरित एवं प्रभावी कार्यवाही सुनिश्चित करें।

मंत्री श्री शर्मा ने वन विभाग के अधिकारियों को निर्देशित किया कि जिलेभर में वन कर्मियों की चौकियों एवं नाकों का निरीक्षण कर जर्जर भवनों की स्थिति का आंकलन करें तथा जहां भी नवीन भवनों की आवश्यकता हो, वहां तत्काल प्रस्ताव तैयार कर भिजवाएं। प्रत्येक शिकायत का गंभीरता से संज्ञान लिया जाए एवं त्वरित कार्यवाही सुनिश्चित की जाए।

बैठक में जिला कलेक्टर श्री जसमीत सिंह संधू ने जिले में वन क्षेत्र की मौजूदा स्थिति, वृक्षारोपण की प्रगति एवं औद्योगिक क्षेत्रों में पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखने हेतु प्रशासन द्वारा किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि हरियालों तीज के अवसर पर निर्धारित लक्ष्य 11 लाख के विरुद्ध 13 लाख पौधों का रोपण कर लक्ष्य से अधिक पौधारोपण किया गया है।

उप वन संरक्षक श्री गौरव गर्ग ने भीलवाड़ा वन मण्डल की गतिविधियों का विस्तृत प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। उन्होंने हरियालों राजस्थान अभियान के तहत जिले में पौधारोपण की स्थिति, वन अग्नि नियंत्रण, वॉच टावर स्थापना, वाइल्ड लाइफ सेंसस एवं अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही की जानकारी दी। उन्होंने विगत दिनों जिले में वन्य जीवों के रेस्क्यू ऑपरेशन की सफल कार्यवाही की जानकारी भी दी।

राज्य मंत्री श्री शर्मा ने सिंगल यूज प्लास्टिक पर नियंत्रण, औद्योगिक क्षेत्रों में जल निकासी से भूमिगत जल पर पड़ रहे दुष्प्रभाव तथा ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छ पेयजल उपलब्ध कराने हेतु प्रदूषण नियंत्रण मंडल को प्रभावी कदम उठाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार जल संरक्षण एवं पर्यावरण संतुलन के लिए संकल्पित है और इसमें किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बैठक में उप वन संरक्षक श्री गर्ग ने जिले में ईको-टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी। उन्होंने हमीरगढ़ इको पार्क के विकास कार्यों, पावर स्टेशन निर्माण तथा जल संरक्षण के लिए नर्सरियों में बारिश के पानी का उपयोग कर पौधों की पौधशाला तैयार करने की कार्ययोजना प्रस्तुत की। वाइल्ड लाइफ संरक्षण के लिए चल रहे प्रयासों की भी विस्तार से जानकारी दी गई।इसके पश्चात राज्य मंत्री श्री शर्मा ने जनप्रतिनिधियों के साथ राजकीय बालिका उच्च प्राथमिक विद्यालय मोखमपुरा गांधीनगर विद्यालय परिसर में पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

शिवलिंगः प्रतीक भी, परम सत्य भी

तब सिद्ध हुआ कि शिव का रूप सीमाओं से परे है – और शिवलिंग, उस असीम का प्रतीक है। लिंग पुराण और स्कन्द पुराण इस विचार को और आगे बढ़ाते हैं – कहते हैं कि शिवलिंग ही वह अनंत आकाश है, जिसमें ब्रह्मांड बसता है। और समय के अंत में यही ब्रह्मांड इसी शिवलिंग में विलीन हो जाएगा। भारतीय संस्कृति में शिवलिंग सिर्फ पत्थर की कोई आकृति नहीं, बल्कि ब्रह्मांडीय चेतना का प्रतीक है। यह हमारी परंपरा में उतना ही पुराना है जितनी पुरानी हमारी वैदिक दृष्टि है। शिवलिंग के पीछे की धारणा सिर्फ पूजन की नहीं, बल्कि गहराई से जुड़ी हुई दर्शन की है – जहां रूप के भीतर अरूप की अनुभूति होती है, और प्रतीक के भीतर निराकार का बोध। वैदिक ग्रंथों में शिवलिंग की जड़ें सीधे अथर्ववेद से जुड़ी हुई हैं। कांड 10, सूक्त 7 के श्लोकों में एक "स्तंभ" की बात की गई है – ऐसा स्तंभ जिसमें सभी 33 देवता समाहित हैं। श्लोक 13 कहता है: यह 'स्कंभ' या स्तंभ, वही है जो बाद में शिवलिंग के रूप में हमारे श्रद्धा और चिंतन का केन्द्र बन गया। इस स्तंभ को ही सृष्टि का आधार, धारणकर्ता और सर्वत्र व्याप्त ब्रह्म माना गया है। यह कहीं से आया नहीं, यह स्वयं में स्थित है – अनादि, अनंत और अव्यक्त। लिंग पुराण और शिव पुराण में इसी वैदिक स्तंभ की कल्पना को शिवलिंग के रूप में विस्तार मिला। लिंगोद्भव कथा में जब ब्रह्मा और विष्णु ने अग्नि के उस अंतहीन स्तंभ की ऊंचाई और गहराई को नापने की कोशिश की, तो वे असफल रहे। यहीं से सिद्ध हुआ कि शिव का रूप सीमाओं से परे है – और शिवलिंग, उस असीम का प्रतीक है। लिंग पुराण और स्कन्द पुराण इस विचार को और आगे बढ़ाते हैं – कहते हैं कि शिवलिंग ही वह अनंत आकाश है, जिसमें ब्रह्मांड बसता है। और समय के अंत में यही ब्रह्मांड इसी शिवलिंग में विलीन हो जाएगा। रुद्रहृदय उपनिषद में शिवलिंग को रुद्र और उमा – दोनों के प्रतीक के रूप में देखा गया है। "रुद्रो लिङ्गमुमा पीठं तस्मै तस्यै नमो नमः।" योगकुण्डलिनी उपनिषद शिवलिंग को ब्रह्मांड और आत्मा के बीच सेतु मानता है। और महानारायण उपनिषद में इसके बाईस पवित्र नामों का उल्लेख कर इसे पवित्रता का स्रोत कहा गया है।

डॉनल्ड ट्रंप के कांटे

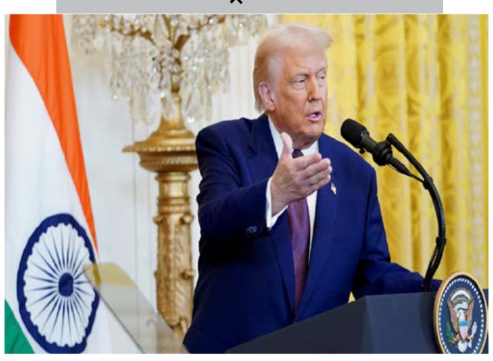

ट्रंप की टिप्पणियां भारतीय प्रभु वर्ग और मीडिया द्वारा भारतवासियों के फुलाये गए अहं में पिन चुभा रही हैं। जरूरत से ज्यादा फुला हुआ ये अहं का गुब्बारा मौजूदा सत्ताधारी पार्टी की एक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक पूंजी रहा है। डॉनल्ड ट्रंप के भारतीय अर्थव्यवस्था को मृत बताने से देश के प्रभु वर्ग का एक बड़ा हिस्सा आहत है। अमेरिकी राष्ट्रपति ने उपरोक्त टिप्पणी द्विपक्षीय व्यापार समझौते के लिए उनकी सभी शर्तों पर फिलहाल भारत के राजी ना होने के बाद की। बाद में अमेरिकी वाणिज्य मंत्री स्कॉट बेसेंट ने एक टीवी इंटरव्यू में कहा कि भारत के इस रुख से ट्रंप नाराज हुए। द्विपक्षीय समझौते की संभावना के बारे में बेसेंट ने कहा कि अब यह भारत पर निर्भर करता है। यानी अमेरिका ने अपनी शर्तों पर अडिग है- भारत उन्हें मानेगा या नहीं, यह उसे तय करना है। इसी क्रम में बेसेंट ने यह भी कह दिया कि 'वैसे भी भारत कोई बड़ी वैश्विक शक्ति नहीं है'। यह टिप्पणी भी भारतीय प्रभु वर्ग को कोई कम कांटा चुभाने वाली नहीं है। ट्रंप प्रशासन पहले ही पाकिस्तान को अधिक तरजीह देकर भारत को भावनात्मक चोट पहुंचा चुका है। यह भारतीय शासक समूहों के लिए बड़ा संकट है। सिर्फ इसलिए नहीं कि अमेरिका उनकी पसंदीदा विदेश नीति का केंद्र रहा है। बल्कि इसलिए भी कि अमेरिकी नेताओं की टिप्पणियां प्रभु वर्ग और उनके मीडिया की तरफ से भारतवासियों के फुलाये गए अहं के गुब्बारे में पिन चुभा रही हैं। जरूरत से ज्यादा फुला हुआ ये गुब्बारा घरेलू राजनीति में मौजूदा सत्ताधारी पार्टी की महत्त्वपूर्ण राजनीतिक पूंजी रहा है। तो इस पूंजी को संभालने की कोशिश हो रही है। मेनस्ट्रीम मीडिया में ट्रंप को जवाब देने के लिए आंकड़ों, सारणियों और ग्राफ का सहारा लिया गया है। भारत की जीडीपी की वृद्धि की दर का उल्लेख करते हुए बताने की कोशिश की गई है कि भारत की अर्थव्यवस्था मृत नहीं, बल्कि फूल-फल रही है। मगर यह आंकड़ों की नहीं, धारणाओं की बात है। तमाम आर्थिक चुनौतियों को नजरअंदाज करते हुए भारत में ऐसे आंकड़ों के जरिए ये धारणा बनाई गई थी कि दुनिया में आज भारत का कोई सानी नहीं है। जबकि ट्रंप और उनके प्रशासन के अधिकारियों की टिप्पणियों का संदेश है कि दुनिया इस रूप में भारत को नहीं देखती। सत्ता पक्ष पर और उनके गढ़े नैरेटिव्स पर यह एक तरह का वज्रपात है।

भारत में क्या 'डेड', क्या जिंदा!

नरेंद्र मोदी के प्रधानमंत्री कार्यकाल की एक पहचान उनकी डोनाल्ड ट्रंप के पालने (सीएम रहते हुए उनका पालना मोहन भागवत का था) की किलकारियां भी हैं। उन्होंने मर्यादा को ताक में रख अबकी बार ट्रंप सरकार का नारा तक लगाया था। मगर कैसी अनहोनी जो ट्रंप ने भारत को अब रूस से नत्थी कर कहा है कि 'रूस जैसे ही भारत की इकॉनोमी डेड है! दोनों साथ डूबें, मुझे क्या'। सवाल है ट्रंप ने झूठ बोला या सत्य? यदि झूठ है तो क्या अब तक नरेंद्र मोदी को स्वंय साहस से जवाब दे कर यह क्या नहीं कहना था कि अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप झूठ बोल रहे हैं? भारत की अर्थव्यवस्था जिंदा ही नहीं वह विश्व की चौथी अर्थव्यवस्था होने वाली है। यदि ट्रंप की तरह नरेंद्र मोदी की भी छप्पन इंची छाती होती तो उनका यह कहना भी जायज होता कि ट्रंट अपनी इकोनॉमी को डेड बना दे रहे हैं, जबकि उन्होंने भारत को विकसित इकॉनोमी बनाने की और दौड़ा रखा है! सोचें, पिछले ग्यारह वर्षों से नरेंद्र मोदी भारत के 140 करोड़ लोगों से (इस 15 अगस्त को फिर वे लाल किले से कहेंगे) कह रहे है कि भारत विकास की ओर दौड़ रहा है। भारत अब आर्थिक और सैनिक महाशक्ति के स्वर्णकाल, अमृतकाल में है। मगर इन्हीं दोनों मामलों में 10 मई 2025 के बाद से डोनाल्ड ट्रंप भारत को वैश्विक तौर पर एक्सपोज कर रहे हैं। ध्यान रहे दुनिया में ट्रंप का कहा सुना जाता है न कि भारत का। दुनिया लगातार ट्रंप से सुन रही है कि 'मैंने सीजफायर कराया'। इतना ही नहीं उन्होंने चार-पांच विमानों के धड़ाधड़ गिरने की संख्या बताते हुए भारत की सैन्य क्षमता का मखौल भी बनवाया। और बेशर्मी की इंतहां देखिए जो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने लोकसभा में दो घंटे का भाषण दिया लेकिन यह लाइन नहीं बोली कि डोनाल्ड ट्रंप का बोलना झूठ है। भारत ने एक भी विमान नहीं खोया। अमेरिका ने, ट्रंप प्रशासन ने मध्यस्थता नहीं की। ट्रंप जबरदस्ती बीच में कूद कर सीजफायर का श्रेय ले रहे है! ट्रंप और उनके प्रशासन का कोई रोल नहीं था। इसी तरह नरेंद्र मोदी को खुद दो टूक यह जवाब देना चाहिए कि राष्ट्रपति ट्रंप ने भारत की इकॉनोमी को मरा बताया है, यह झूठ है। और ऐसा वे यदि समझते हैं तो वे मरी अर्थव्यवस्था वाले देश से व्यापार करें या नहीं करें, हमें फर्क नहीं पड़ता। अमेरिका दबाव बना कर जो चाह रहा है भारत उसे कतई नहीं मानेगा। क्या दोनों मामलों में खुद प्रधानमंत्री मोदी को जवाब नहीं देना चाहिए? जिन मोदी ने अमेरिका की जमीन में ट्रंप को जिताने की नारेबाजी की क्या उनमें इतनी भी हिम्मत नहीं जो ट्रंप को सीधे जवाब दें! सोचें, यूक्रेन के जेलेंस्की पर। उन्होंने व्हाइट हाउस में ट्रंप और

उनके प्रशासन के सामने, वैश्विक मीडिया के सामने किस बेबाकी से अपना पक्ष रखा था? ट्रंप की बोलती बंद कर दी थी। अभी इन दिनों ब्राजील के राष्ट्रपति खुद ट्रंप से भिडे हुए हैं और उन्हें ट्रंप के टैरिफ की चिंता नहीं है! पर प्रधानमंत्री मोदी नहीं बोल सकते। और वे नहीं बोल कर भी डोनाल्ड ट्रंप के कहे को सत्य साबित तक दे रहे हैं। उन्हें समझ आ गया है कि वे झूठ से भारत के 140 करोड़ लोगों को बहका सकते हैं मगर दुनिया और वैश्विक महाशक्तियों को नहीं। तभी ग्यारह वर्षों में भारत के झूठ में जीने का नतीजा है जो पाकिस्तान की अब वैश्विक राजनीति में तूती है। याद करें 2014 के समय की पाकिस्तान की दशा और उसके आत्मबल को। जनरल मुशर्रफ के बाद पाकिस्तान लगभग अछूत था। अफगानिस्तान की वजह से अमेरिका का व्यवहार जरूर बना हुआ था। लेकिन राष्ट्रपति ओबामा से लेकर शी जिनफिंग, पुतिन तब डॉ. मनमोहन सिंह और भारत का भरपूर मान-सम्मान करते थे। उसी बैकग्राउंड के कारण उन तीनों नेताओं ने 2014 में भारत में नए आइडिया की मोदी सरकार के आने से संभावनाएं बूझीं। उसका मोदी ने फायदा उठाया। साबरमती के किनारे शी जिनफिंन को झूला झुलाया। ओबामा को चाय पिलाई। नवाज शरीफ के घर जा कर पकौड़े खाए। लेकिन आज क्या हकीकत है? चीन ने भारत की इकोनॉमी का खा लिया है। पाकिस्तान का सेना प्रमुख ट्रंप के साथ लंच कर रहा है तथा पुतिन चीन के साझे में पाकिस्तान का संरक्षक है। वही अमेरिका की निगाह में भारत 'डेड' है! क्या मैं गलत हूं? नरेंद्र मोदी, अजित डोवाल, जयशंकर और भाजपा सरकार, संघ परिवार तथा भक्त कुछ भी बोलें, राहुल गांधी, विपक्ष, मीडिया को कितनी ही गाली दे कर, पोस्ट लिख-लिख कर झूठा करार दें लेकिन इस वास्तविकता को कौन अनदेखा करेगा कि भारत में सत्य 'डेड' (मृत) हो चुका है। अब भारत झूठमेव का वह खोखा है, जिसमें असल कुछ भी नहीं बचा। गौर करें संसद के मौजूदा सत्र पर? क्या तो प्रधानमंत्री और क्या मंत्री किसी के भी मुंह से वह सत्य निकला जो दुनिया बोल रही है या दुनिया मान रही है! इसलिए क्योंकि सत्य अब भारत में 'डेड' है। यों सब है लेकिन झूठ व पाखंड के खोखे में तब्दील। हां, भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है पर वह कलियुगी भगवान मोदी की आरती उतारता हुआ है! तो लोकतंत्र असल हुआ या खोखा? चुनाव है पर चुनाव आयोग बेईमान है। विपक्ष है पर ईडी, सीबीआई, लालच, लाठी मे बंधा हुआ। ऐसे ही मीडिया है लेकिन उसकी आवाज-अभिव्यक्ति खरीदी हुई है या भयाकुल। राष्ट्रपति, उप राष्ट्रपति आदि के ढेरों संवैधानिक पद हैं लेकिन एक व्यक्ति की इच्छा-अनिच्छा से बने ये मात्र चेहरे हैं जो बन कर केवल बैठते है या मांगने पर बेचारे इस्तीफा दे देते हैं। इकोनॉमी विशाल है पर इकोनॉमी का खोखा सौ-सवा सौ करोड़ राशन-खैराती भीड़ से भागता हुआ है। और खोखे की दशा इतनी बुरी है कि यदि चीन सामान बेचना बंद कर दे तो बाजार खाली हो जाए! तो ऐसी इकोनॉमी को 'डेड' कहेंगे या जिंदा? बावजूद इसके नोट रखें, प्रधानमंत्री मोदी पंद्रह अगस्त के बाद ट्रंप के साथ टैरिफ सौदा पटाएंगे। क्योंकि ट्रंप के पास गौतम अडानी नाम का वह टेंटुआ है, जिसे उन्होंने ज्योंहि मरोड़ा भारत उनकी शर्तों पर समझौता करेगा। हालांकि वे तब भी संतुष्ट नहीं होने हैं। वे पाकिस्तान के सगे होते लग रहे हैं। वे मोदी से मनमाना समझौता करा कर यदि क्वाड के लिए अक्टूबर में भारत आए भी तो संभव है पाकिस्तान होते हुए आएं। तब सोचिएगा भारत की उस विकट दुर्दशा पर, जहां पाकिस्तान-चीन दोनों मिलकर भारत से सटी पूरी सीमा पर सेनाओं का साझा ठोस मोर्चा बनाए हुए दिखेंगे वही ऊपर से ट्रंप इस्लामाबाद में जनरल मुनीर के साथ लंच करते हुए!

लवली और चौहान क्या से क्या हो गए!

बहुत पहले कहीं पढ़ा था कि खबर को प्रस्तुत करने के तरीके से उसका अर्थ बदल सकता है। जैसे अमेरिका और रूस के धावक की रेस लगी, जिसमें अमेरिकी धावक जीत गया, इस सामान्य सी खबर को रूस में मीडिया कैसे छापेगा? रूस में यह खबर ऐसे छप सकती है कि रूसी धावक दूसरे स्थान पर रहा और अमेरिकी धावक हारने वाले सिर्फ एक स्थान आगे था। इसमें तथ्यात्मक रूप से कुछ भी गलत नहीं है लेकिन इसका अर्थ बदल गया है। ऐसी ही खबर रविवार, तीन अगस्त को अखबारों में देखने को मिली। लगभग सभी अखबार ने इस खबर को काफी प्रमुखता से छापा है कि कांग्रेस छोड़ कर भाजपा में गए दो नेताओं को बड़ी जिम्मेदारी मिली है। ये दो नेता हैं अरविंदर सिंह लवली

और राजकुमार चौहान। गांधीनगर के विधायक लवली को यमुना पार के विकास के लिए बने ट्रांस यमुना डेवलपमेंट बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया है, जबकि राजकुमार चौहान को विलेज डेवलपमेंट बोर्ड का अध्यक्ष बनाया गया है। मीडिया में तीन-तीन कॉलम में यह खबर छपी है कि दोनों को बहुत बड़ी जिम्मेदारी मिली है। सवाल है कि क्या खबर लिखने वालों में से किसी को पता नहीं है कि लवली और चौहान पहले क्या थे? लवली 20 साल पहले दिल्ली सरकार के मंत्री होते थे। वे दिल्ली कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष रहे। राजकुमार चौहान भी 20 साल पहले मंत्री होते थे और दिल्ली में कांग्रेस का दलित चेहरा थे। दोनों तत्कालीन मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के चहेते मंत्री थे। लवली और चौहान एक समय अपने चेले चपाटों को बोर्ड या निगम का अध्यक्ष और सदस्य बनवाते थे। आज उनकी हैसियत यह रह गई है कि खुद बोर्ड का अध्यक्ष बने हैं तो मीडिया कह रहा है कि बड़ी जिम्मेदारी मिली है!

निर्वाचन आयोग का नजरिया!

सुप्रीम कोर्ट ने कहा था कि निर्वाचन आयोग का नजरिया निष्कासन के बजाय समावेशन होना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं लगता कि एसआईआर के बाद बिहार की मतदाता सूची का प्रारूप जारी करते समय आयोग ने ये सलाह सुनी है। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) पर पिछली सुनवाई के दौरान सुप्रीम कोर्ट ने निर्वाचन आयोग को एक महत्त्वपूर्ण सलाह दी। कोर्ट ने कहा कि आयोग का नजरिया निष्कासन के बजाय समावेशन होना चाहिए। लेकिन ऐसा नहीं लगता कि एसआईआर के बाद बिहार की मतदाता सूची का प्रारूप जारी करते समय आयोग ने न्यायालय की सलाह सुनी है। यह प्रारूप 65 लाख से ज्यादा नाम काटते हुए तैयार किया गया है। आयोग ने कहा है कि अब बिहार के सभी मतदाता आयोग के पोर्टल पर जाकर अपने नाम की तलाश करें। अगर नाम लापता है, तो फिर आयोग की तरफ

से तय दस्तावेजों को पेश करते हुए अपना दर्ज कराने की अर्जी दें। जो नए मतदाता अक्टूबर तक 18 साल के हो जाएंगे, उन्हें भी ऐसी ही सलाह दी गई है। इसका अर्थ है कि अगर आप अपना मताधिकार पाना चाहते हैं, तो इसके लिए जरूरी प्रयास करना आपका दायित्व है। यह नजरिया समावेशन का नहीं है। समृद्ध और जीवंत लोकतंत्र वह होता है, जहां अपने अधिकार का उपयोग करने के लिए व्यक्तियों को सक्षम बनाने का दायित्व राज्य या संवैधानिक संस्थाएं अपने कंधों पर लेती हैं। भारत के गरीब और आधुनिक सुविधाओं से वंचित व्यक्तियों से यह अपेक्षा करना अभिजात्य नजरिए का सूचक है कि लोग खुद वोटर लिस्ट में अपना नाम दर्ज की जद्दोजहद में जुटेंगे। एसआईआर के क्रम में आयोग ने आधार कार्ड को प्राथमिक दस्तावेज ना मान कर भी ऐसे ही नजरिए का परिचय दिया था। सर्वोच्च न्यायालय ने उपरोक्त टिप्पणी की, तो अनुमान लगाया जा सकता है कि उसे भी ऐसे नजरिए का आभास हुआ होगा। उस पर ध्यान ना देकर निर्वाचन आयोग ने यही संकेत दिया है कि एसआईआर के मामले में वह कोई सलाह सुनने को तैयार नहीं है। ना ही वह इस प्रक्रिया से आशंकित विपक्षी दलों से संवाद करने को तैयार है। जाहिर है, उसे इस प्रक्रिया में निर्वाचन से जुड़े सभी हितधारकों का विश्वास हासिल करने की तनिक भी चिंता नहीं है। यह चिंताजनक स्थिति है। इसका परिणाम भारत की चुनाव प्रक्रिया में अविश्वास का बढ़ना होगा, जो एक अशुभ घटना होगी।

ट्रंप का टैरिफ तोहफ़ा है चुनौती!

ट्रंप ने भारत को 'डेड इकॉनमी' कहकर निशाना बनाया, और यह कहा कि भारत दुनिया में सबसे अधिक टैरिफ लगाने वाला देश है। उन्होंने भारत की 'गैर-मौद्रिक व्यापार बाधाओं' की भी आलोचना की — जिनका अर्थ है कि भारत तकनीकी, प्रशासनिक या नियामक उपायों के ज़रिए विदेशी कंपनियों को यहां व्यापार करने से रोकता है या कठिन बनाता है। अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने एक बार फिर वैश्विक व्यापार संतुलन को झकझोर दिया है — और इस बार सीधा निशाना भारत पर लगाया गया है। ट्रंप ने घोषणा की है कि भारत से अमेरिका को होने वाले आयात पर 25% टैरिफ लगाया जाएगा, साथ ही रूस से तेल और हथियार खरीदने के लिए भारत को दंडात्मक कार्रवाई का सामना करना पड़ेगा। यह फैसला भारत-अमेरिका व्यापार संबंधों में अचानक तनाव बढ़ाने वाला है, और इसने एक बार फिर यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या भारत की विदेश नीति अब प्रभावशीलता खो रही है या फिर यह भू-राजनीतिक दबाव के सामने चुप रह जाने की रणनीति का परिणाम है। ट्रंप की इस घोषणा का समय भी ध्यान देने योग्य है। पिछले कुछ महीनों से भारत और अमेरिका के बीच एक संभावित व्यापार समझौते को लेकर सकारात्मक संकेत मिल रहे थे। द्विपक्षीय वार्ताएं हो रही थीं, और यह माना जा रहा था कि दोनों देश अपनी व्यापार नीति में स्थायित्व और सहकारिता की ओर बढ़ रहे हैं। लेकिन ट्रंपकी घोषणा ने इस प्रक्रिया को एक झटके में उलट दिया। ट्रंप ने भारत को 'डेड इकॉनमी' कहकर निशाना बनाया, और यह कहा कि भारत दुनिया में सबसे अधिक टैरिफ लगाने वाला देश है। उन्होंने भारत की 'गैर-मौद्रिक व्यापार बाधाओं' की भी आलोचना की — जिनका अर्थ है कि भारत तकनीकी, प्रशासनिक या नियामक उपायों के ज़रिए विदेशी कंपनियों को यहां व्यापार करने से रोकता है या कठिन बनाता है। उन्होंने यह आरोप भी जोड़ा कि भारत, रूस से तेल और सैन्य उपकरणों की खरीद जारी रखकर यूक्रेन युद्ध के मुद्दे पर अमेरिका की नीति का खुला उल्लंघन कर रहा है। इस कदम का प्रत्यक्ष असर भारत के उन क्षेत्रों पर पड़ सकता है जो अमेरिका को निर्यात के मामले में सबसे महत्वपूर्ण हैं — जैसे फार्मास्यूटिकल्स, रत्न और आभूषण, टेक्सटाइल, चमड़ा, समुद्री उत्पाद और ऑटोमोबाइल। 25% का टैरिफ

इन उत्पादों की अमेरिकी बाज़ार में प्रतिस्पर्धात्मकता को सीधे प्रभावित करेगा। यानी भारतीय कंपनियों के लिए अमेरिकी बाज़ार अब पहले जितना सुलभ नहीं रहेगा। विपक्ष ने इसे लेकर तुरंत सरकार पर निशाना साधा। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने ट्रंपके 'डेड इकॉनमी' वाले बयान का स्वागत करते हुए कहा, "ट्रंपसही हैं। पूरी दुनिया जानती है कि भारत की अर्थव्यवस्था मृत है — सिर्फ प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री को छोड़कर।" राहुल गांधी ने नोटबंदी और जीएसटी को इस 'मृत्यु' का कारण बताया और सरकार की आर्थिक नीतियों को पूरी तरह विफल करार दिया। यह प्रतिक्रिया राजनीति की परंपरागत लड़ाई से आगे निकल गई, और सीधे-सीधे विदेश नीति के मोर्चे पर सरकार की स्थिति को कठघरे में खड़ा कर दिया गया। कांग्रेस की प्रवक्ता सुप्रिया श्रीनेत ने कहा, "हम अमेरिका को सबसे अधिक फार्मास्यूटिकल्स निर्यात करते हैं। अगर 25% टैरिफ लगाया गया, तो ये दवाएं महंगी होंगी, मांग घटेगी, और इससे उत्पादन तथा रोजगार पर सीधा असर पड़ेगा।" विपक्ष के अन्य नेताओं ने भी इस मुद्दे को व्यापक रूप से उठाया। समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव ने कहा कि यह भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए "बुरे दिनों की शुरुआत" है। AIMIM प्रमुख असदुद्दीन ओवैसी ने ट्रंपको "व्हाइट हाउस का जोकर" कहकर कटाक्ष किया, लेकिन साथ ही सरकार की चुप्पी पर भी सवाल उठाया। हालांकि, कांग्रेस में भी शशि थरूर जैसे कुछ नेताओं ने ज़्यादा संतुलित दृष्टिकोण अपनाया। उन्होंने चेताया कि भारत को केवल अमेरिका पर निर्भर नहीं रहना चाहिए और अपने निर्यात बाज़ारों में विविधता लानी होगी, वरना इस तरह के झटके भारत की समग्र अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचा सकते हैं। इस मुद्दे पर विशेषज्ञों की राय भी दो भागों में बंटी हुई है। कुछ अर्थशास्त्रियों का मानना है कि इस टैरिफ का प्रभाव सीमित होगा और भारत अन्य बाज़ारों की ओर रुख कर सकता है। लेकिन कई विशेषज्ञों ने इसे दीर्घकालिक नुकसान की चेतावनी के रूप में देखा है। ICRA की मुख्य अर्थशास्त्री अदिति नायर ने कहा, "प्रस्तावित टैरिफ और दंड हमारी अपेक्षा से अधिक हैं। इससे भारत की जीडीपी वृद्धि पर असर पड़ सकता है। इसका प्रभाव इस पर निर्भर करेगा कि टैरिफ की प्रकृति और अवधि कितनी लंबी है।" EY इंडिया के व्यापार नीति विशेषज्ञ अग्नेश्वर सेन ने कहा कि "समुद्री उत्पाद, फार्मा, टेक्सटाइल और चमड़ा जैसे क्षेत्र भारत-अमेरिका व्यापार में प्रमुख हैं और इनकी प्रतिस्पर्धा पर असर पड़ेगा।" फाउंडेशन फॉर इकोनॉमिक डेवलपमेंट के राहुल अहलूवालिया ने कहा कि "भारत को अब चीन और वियतनाम जैसी अर्थव्यवस्थाओं के मुकाबले कमज़ोर समझा जाएगा। सप्लाई चेन का भारत की ओर स्थानांतरण जो कोविड के बाद एक संभावना बनता दिख रहा था — वह अब दूर जाता दिख रहा है।" इसके विपरीत, फिक्की के अध्यक्ष हर्षवर्धन अग्रवाल ने अपेक्षाकृत आशावादी स्वर अपनाते हुए कहा कि "यह कदम दुर्भाग्यपूर्ण है लेकिन शायद अस्थायी हो। हमें उम्मीद है कि भारत और अमेरिका जल्द ही किसी स्थायी व्यापार समझौते पर पहुंचेंगे।" भारत सरकार ने फिलहाल संयमित रुख अपनाया है। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल ने कहा कि "राष्ट्रीय हितों की रक्षा के लिए सभी आवश्यक कदम उठाए जाएंगे। भारत ने एक दशक में 'फ्रैजाइल फाइव' से दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था बनने का सफर तय किया है।" सरकारी सूत्रों ने संकेत दिया कि भारत जवाबी टैरिफ लगाने के बजाय संवाद और कूटनीतिक माध्यम से समाधान तलाशेगा। एक वरिष्ठ अधिकारी ने नाम न छापने की शर्त पर कहा, "हम इस मुद्दे पर सार्वजनिक प्रतिक्रिया देने से बच रहे हैं क्योंकि यह बहुत संवेदनशील मामला है। चुप्पी सबसे अच्छा जवाब है — और हम बातचीत की मेज़ पर इसे सुलझाएंगे।" लेकिन क्या चुप्पी वाकई सबसे अच्छा जवाब है? यह सवाल इस पूरे विवाद के केंद्र में है। क्योंकि भारत जिस तरह से वैश्विक शक्ति समीकरणों में अपनी जगह बना रहा है, उसके लिए यह जरूरी है कि वह हर चुनौती का सार्वजनिक और स्पष्ट उत्तर दे — केवल घरेलू राजनीति के लिए नहीं, बल्कि अपने अंतरराष्ट्रीय साझेदारों के लिए भी। ट्रंपकी यह घोषणा भारत-अमेरिका संबंधों में केवल एक व्यापारिक मोड़ नहीं है। यह उस व्यापक कूटनीतिक असंतुलन की ओर इशारा करती है, जहां भारत को अपनी रणनीतिक स्वायत्तता और भू-राजनीतिक विकल्पों को एक साथ साधना होगा। यदि भारत अमेरिकी दबाव में झुकेगा, तो वह रूस, ईरान, और वैश्विक दक्षिण के साझेदारों के बीच अपना विश्वास खो देगा। और यदि वह पूरी तरह टकराव की नीति अपनाता है, तो अमेरिका जैसे साझेदार से टकराव उसकी आर्थिक आकांक्षाओं को चोट पहुंचा सकता है। इसलिए यह संकट सरकार के लिए एक नीतिगत परीक्षा है — जिसमें केवल आंकड़ों, दरों या निर्यात आंकड़ों की बात नहीं है, बल्कि भारत की वैश्विक स्थिति, कूटनीतिक परिपक्वता, और रणनीतिक संतुलन की असली परीक्षा है। यह कोई सामान्य टैरिफ नहीं — यह एक संकेत है।

सिराज किसी भी कप्तान का सपना है... भारतीय गेंदबाज के लिए शुभमन गिल ने दिल खोलकर रख दिया

एजेंसी लंदन

भारतीय कप्तान शुभमन गिल का मानना है कि मोहम्मद सिराज जैसी क्षमता और कौशल वाला गेंदबाज हर कप्तान का सपना होता है। गिल ने साथ ही 2-2 की बराबरी को इंग्लैंड के खिलाफ पांच टेस्ट मैच की सीरीज में दिखाए गए क्रिकेट के स्तर का 'उचित प्रतिबिंब' करार दिया। सीरीज में 754 रन और चार शतक के साथ भारत के सीरीज के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी रहे गिल ने सिराज की जमकर तारीफ की जिनके द ओवल में मैच में नौ विकेट की बदौलत भारत ने जीत दर्ज की और सीरीज बराबर की। गिल ने मैच के बाद अवॉर्ड सेरेमनी के दौरान माइकल आथर्टन से कहा, 'सिराज किसी भी कप्तान का सपना है। उन्होंने हर गेंद और हर स्पैल में अपना सब कुछ झोंक दिया। 2-2 की बराबरी एक उचित प्रतिबिंब है। यह दर्शाता है कि दोनों टीम कितने जोश से भरी थीं और उन्होंने कितना अच्छा खेला।' कप्तान ने तेज गेंदबाज प्रसिद्ध कृष्णा की भी तारीफ की जिन्होंने मैच में आठ विकेट लिए। वह हालांकि थोड़े महंगे साबित हुए। गिल ने कहा, 'जब आपके पास मोहम्मद सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा जैसे गेंदबाज हों तो कप्तानी आसान लगती है। मुझे लगता है कि आज हमने जिस तरह से प्रतिक्रिया दी वह शानदार थी। हमें पूरा विश्वास था, कल भी, हमें पता था कि वे दबाव में हैं।' इस सीरीज में एक बल्लेबाज के रूप में अपनी परिपक्वता के बारे में गिल ने स्वीकार किया कि यह संतोषजनक था। गिल ने कहा, 'हम यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि यह पूरी सीरीज में हो। यह बहुत ही संतोषजनक रहा, मेरा लक्ष्य इस सीरीज में सर्वश्रेष्ठ बल्लेबाज बनना था और वहां तक पहुंचना बहुत संतोषजनक है। यह हमेशा तकनीकी और मानसिक रूप से चीजों को सुलझाने का मामला होता है, ये आपस में जुड़े हुए हैं।' छह हफ्तों की सीरीज से मिली सीख के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा, 'हम कभी हार नहीं मानते।'

पाकिस्तान ने वेस्टइंडीज के खिलाफ जीती लगातार सातवीं टी20 सीरीज

एजेंसी नई दिल्ली

पाकिस्तान ने वेस्टइंडीज के खिलाफ तीन मुकाबलों की टी20 सीरीज 2-1 से अपने नाम कर ली है। इस टीम ने वेस्टइंडीज के खिलाफ फ्लोरिडा में सोमवार को खेले गए तीसरे टी20 मैच को 13 रन से अपने नाम किया। पाकिस्तान ने वेस्टइंडीज को लगातार सातवीं बार टी20 सीरीज में मात दी है। पाकिस्तान ने साल 2011 में वेस्टइंडीज का दौरा किया, जिसमें मेहमान टीम इकलौते टी20 मैच को गंवा बैठी। इसके बाद साल 2013 में पाकिस्तान ने इस टीम के विरुद्ध सीरीज के दोनों मैच अपने नाम किए। 2016/17 में पाकिस्तान ने तीन मुकाबलों की टी20 सीरीज में 3-0 से क्लीन स्वीप किया, जबकि साल 2017 में सीरीज 3-1 से अपने नाम की। पाकिस्तान की टीम ने साल 2018 में वेस्टइंडीज के विरुद्ध एक बार फिर 3-0 से क्लीन स्वीप किया। साल 2021 में टी20 सीरीज चार मुकाबलों की थी, लेकिन सीरीज के तीन मुकाबले बेनतीजा रहे। शेष इकलौते मैच को पाकिस्तान ने सात रन से अपने नाम कर सीरीज 1-0 से जीती। 2021/22 में पाकिस्तान ने अपनी सरजमीं पर वेस्टइंडीज के खिलाफ 3-0 से क्लीन स्वीप किया। इसके बाद अमेरिका में उसने पाकिस्तान को 2-1 से हराकर लगातार सातवीं टी20 सीरीज जीत ली है। फ्लोरिडा में चार अगस्त को खेले गए मुकाबले की बात करें, तो पाकिस्तान ने टॉस जीतकर बल्लेबाजी चुनते हुए चार विकेट खोकर 189 रन बनाए। साहिबजादा फरहान और सईम अयूब ने पहले विकेट के लिए 138 रन की साझेदारी की। फरहान 53 गेंदों में पांच छक्कों और तीन चौकों की मदद से 74 रन बनाकर आउट हुए, जबकि सईम अयूब ने 49 गेंदों में दो छक्कों और चार चौकों के साथ 66 रन की पारी खेली। विपक्षी टीम की ओर से जेसन होल्डर, रोस्टन चेज और शमर जोसेफ ने 1-1 विकेट अपने नाम किया।

4 खिलाड़ी विलेन बनते-बनते हीरो बन गए, टीम इंडिया हार जाती तो बिल फटना तय था

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय क्रिकेट टीम ने इंग्लैंड को ओवल पर खेले गए पांचवें टेस्ट मैच में हरा दिया। इस मुकाबले में एक समय टीम इंडिया के कुछ खिलाड़ियों की गलती से हार का खतरा मंडरा रहा था। भारत और इंग्लैंड के बीच खेला गया ओवल टेस्ट मैच बेहद रोमांचक अंदाज में खत्म हो चुका है। भारतीय टीम ने इस मैच में 6 रन से जीत हासिल की। इस मैच को टीम इंडिया एक समय पर हारने के कगार पर थी। लेकिन मोहम्मद सिराज ने मैच को पलट दिया। हालांकि एक समय टीम इंडिया के ही 4 खिलाड़ियों ने ऐसी गलतियां इस मैच में कर दी थीं कि भारतीय टीम इसे हारने के काफी करीब थी। मोहम्मद सिराज ने ओवल टेस्ट के चौथे दिन हैरी ब्रूक का एक कैच फाइन लेग पर छोड़ दिया। उस समय हैरी ब्रूक सिर्फ 19 रन बनाकर खेल रहे थे। लेकिन इसके बाद ब्रूक ने 111 रन की पारी खेल दी। इससे टीम इंडिया मैच से लगभग बाहर हो गई थी। मैच के अंतिम क्षणों में

आकाश दीप से बाउंड्री लाइन पर एक बड़ी गड़बड़ कर दी। इंग्लैंड की टीम उस वक्त 357 रन पर थी। तभी गस एटकिंसन ने मोहम्मद सिराज की गेंद पर एक लंबा शॉट लगाया। बाउंड्री लाइन पर आकाश दीप काफी अंदर खड़े हुए थे और उन्होंने कैच टपका दिया। गेंद सीधा बाउंड्री लाइन के पार चली गई और छक्का हो गया। ध्रुव जुरेल ने मैच के अहम पलों में एक रन आउट मिस कर दिया। इंग्लैंड की टीम के 9 विकेट गिर चुके थे। इंग्लैंड की पारी के 84वें ओवर की आखिरी गेंद पर गस एटकिंसन ने एक शॉट खेला और उनका बल्ला गेंद को नहीं लगा। तभी नॉन स्ट्राइकिंग एंड पर खड़े क्रिस वोक्स दौड़ पड़े और ध्रुव जुरेल ने पीछे से थ्रो फेंका। हालांकि उनका थ्रो विकेट पर लगा नहीं और वोक्स आउट होने से बच गए। जिससे इंग्लैंड को एक रन मिल गया और अगले ओवर में स्ट्राइक पर एटकिंसन आ गए। इस पूरी सीरीज में शुभमन गिल की कप्तानी पर लगातार सवाल उठते रहे। कभी टीम में खिलाड़ियों को शामिल करने को लेकर तो कभी मैदान पर लिए गए फैसलों पर। गिल पूरी सीरीज सवालों में घिरे रहे। लेकिन अगर टीम इंडिया इस सीरीज में हार जाती तो बिल शुभमन गिल की कप्तानी पर फटना तय था।

विराट कोहली ने लुटाया प्यार, मोहम्मद सिराज ने अपने भैया को यूं दिया जवाब

एजेंसी नई दिल्ली

भारतीय टीम ने ओवल के मैदान पर इंग्लैंड को हराकर 5वें और आखिरी टेस्ट में शानदार जीत दर्ज की। एक समय लग रहा था कि भारत हार जाएगा लेकिन शुभमन गिल की टीम ने शानदार वापसी की। विराट कोहली ने इस जीत पर खुशी जताई। उन्होंने मोहम्मद सिराज की खास तौर पर तारीफ की। 374 रनों के लक्ष्य के जवाब में इंग्लैंड की तरफ से जो रूट और हैरी ब्रूक ने शतक बनाए थे। लेकिन सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा ने शानदार गेंदबाजी की और भारत को जीत दिलाई। भारत को आखिरी दिन जीत के लिए 4 विकेट जबकि इंग्लैंड को 35 रनों की जरूरत थी। कोहली ने एक्स पर लिखा, 'टीम इंडिया की शानदार जीत। सिराज और प्रसिद्ध का दृढ़ संकल्प हमें यह अद्भुत जीत दिलाता है। सिराज का विशेष उल्लेख, जो टीम के लिए सब कुछ दांव पर लगा देगा। उसके लिए बहुत खुश हूं।' सिराज ने विराट कोहली के इस ट्वीट पर रिप्लाई किया। भारतीय तेज गेंदबाज ने लिखा- मुझ पर 'विश्वास' करने के लिए धन्यवाद भैया। इसके साथ ही सिराज ने रेड हर्ट वाली इमोजी भी डाली। मैच के आखिरी दिन भारत को सिर्फ 35 रन बचाने थे। सिराज ने शानदार गेंदबाजी की। उन्हें प्रसिद्ध कृष्णा से भी मदद मिली। कृष्णा ने अपने पहले दो गेंदों में 8 रन दिए। इसके बाद मोहम्मद सिराज की वजह से टीम की वापसी हुई। उन्होंने पहले जेमी स्मिथ और फिर जेमी ओवर्टन का विकेट लिया। फिर प्रसिद्ध कृष्णा ने जोश टंग को बोल्ड कर दिया। मैच में कई रोमांचक पल आए। आकाश दीप ने एक कैच छोड़ दिया। आखिरी विकेट के रूप में गस एटकिंसन और क्रिस वोक्स क्रीज पर थे। कंधा डिस्लोकेट होने के बाद भी वोक्स बैटिंग करने उतरे। हालांकि उन्हें स्ट्राइक नहीं मिली। सिराज ने गस एटकिंसन को एक शानदार यॉर्कर फेंकी। उनकी ऑफ स्टंप उखड़ गई। इससे भारत ने सीरीज बराबर कर ली। पारी में सिराज को 5 जबकि प्रसिद्ध कृष्णा को 4 विकेट मिले।

रोमांचक मुकाबले में छह रन से जीता भारत, सीरीज 2-2 की बराबरी पर

एजेंसी नई दिल्ली

भारत ने 'केंनिग्टन ओवल' में खेले गए रोमांचक मुकाबले को 6 रन से अपने नाम किया। पांचवां टेस्ट जीतने के साथ टीम इंडिया ने सीरीज 2-2 से बराबरी पर खत्म की। मुकाबले में टॉस गंवाकर बल्लेबाजी के लिए उतरी भारतीय टीम पहली पारी में महज 224 रन ही बना सकी। इस पारी में करुण नायर ने 57 रन बनाए, लेकिन टीम को सम्मानजनक स्कोर तक नहीं पहुंचा सके। इंग्लैंड के लिए इस पारी में गस एटकिंसन ने सर्वाधिक पांच शिकार किए, जबकि जोश टंग ने तीन विकेट चटकाए। इसके जवाब में इंग्लैंड ने पहली पारी में 247 रन बनाते हुए 23 रन की मामूली बढ़त हासिल कर ली। इंग्लैंड की ओर से जैक क्रॉली ने सर्वाधिक 64 रन बनाए, जबकि हैरी ब्रूक ने 53 रन का योगदान टीम के खाते में दिया। भारत की तरफ से मोहम्मद सिराज और प्रसिद्ध कृष्णा ने चार-चार विकेट चटकाए, जबकि आकाश दीप ने एक खिलाड़ी को अपना शिकार बनाया। दूसरी पारी में भारत 70 के स्कोर तक अपने दो

विकेट गंवा चुका था। यहां से यशस्वी जायसवाल ने आकाश दीप के साथ तीसरे विकेट के लिए 107 रन की साझेदारी करते हुए टीम को संभालने की कोशिश की। जायसवाल ने 14 चौकों और दो छक्कों की मदद से 118 रन बनाए, जबकि आकाश दीप ने 66 रन की पारी खेली। इनके अलावा रवींद्र जडेजा (53) और वाशिंगटन सुंदर (53) ने अर्धशतक जमाए। भारत की दूसरी पारी में जोश टंग ने पांच विकेट हासिल किए। गस एटकिंसन को तीन, जबकि जेमी ओवरटन को दो सफलताएं हाथ लगीं। इंग्लैंड को जीत के लिए 374 रन का टारगेट मिला। जैक क्रॉली (14) और बेन डकेट (54) के बीच पहले विकेट के लिए 50 रन की साझेदारी हुई। कप्तान ओली पोप (27) जब आउट हुए, उस वक्त टीम तीन विकेट खोकर 106 रन बना चुकी थी। यहां से जो रूट ने हैरी ब्रूक के साथ 195 रन जोड़ते हुए टीम को जीत के करीब ला दिया। रूट ने 105 रन बनाए, जबकि ब्रूक ने 111 रन की पारी खेली। मुकाबले के अंतिम दिन इंग्लैंड को जीत के लिए 35 रन की दरकार थी, लेकिन 347 के स्कोर पर जेमी स्मिथ का विकेट निकालने के बाद भारत ने मैच में वापसी करते हुए इंग्लैंड को 367 रन पर ऑलआउट कर दिया। इंग्लैंड ने सीरीज का पहला मैच पांच विकेट से अपने नाम किया, जिसके बाद टीम इंडिया ने 336 रन से दूसरा मैच जीतते हुए सीरीज में बराबरी कर ली। इंग्लैंड ने तीसरा मैच 22 रन के करीबी अंतर से जीतकर सीरीज में बढ़त हासिल कर ली थी। इसके बाद चौथा मैच ड्रॉ रहा था।

व्यापार

चीन के बाद सबसे ज्यादा टैरिफ, बड़े नुकसान का सिग्नल, अमेरिका में भारत कितना रह जाएगा

एजेंसी नई दिल्ली

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के भारतीय सामानों पर 25% अतिरिक्त टैरिफ लगाने से भारत का अमेरिका को निर्यात 30% तक घट सकता है। जीटीआरआई के अनुसार, इससे चालू वित्त वर्ष में निर्यात 60.6 अरब डॉलर रह जाने का अनुमान है। निर्यात को बढ़ावा देने के लिए जीटीआरआई ने सरकार को कई सुझाव दिए हैं। वहीं, मूडीज रेटिंग्स का कहना है कि अमेरिकी बाजार में कम पहुंच से भारत के मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर की ग्रोथ धीमी हो सकती है। हालांकि, घरेलू मांग मजबूत रहने की उम्मीद है। अमेरिका ने भारत के अलावा चीन, वियतनाम और अन्य देशों पर भी टैरिफ लगाया है। ग्लोबल ट्रेड रिसर्च इनिशिएटिव (जीटीआरआई) ने एक रिपोर्ट जारी की है। इस रिपोर्ट में कहा गया है कि अमेरिका की ओर से भारतीय वस्तुओं पर 25% का अतिरिक्त टैरिफ लगने से भारत को नुकसान होगा। जीटीआरआई का अनुमान है कि इस टैरिफ के कारण चालू वित्त वर्ष में भारत का अमेरिका को होने वाला निर्यात 30% तक घट सकता है। इसका मतलब है कि निर्यात 86.5 अरब डॉलर से घटकर लगभग 60.6 अरब डॉलर रह सकता है। जीटीआरआई के संस्थापक अजय श्रीवास्तव ने कहा, 'भारतीय वस्तुओं पर दबाव है। इसके चलते

अमेरिका को भारत का निर्यात लगभग 30 फीसदी घटकर वित्त वर्ष 2025-26 में लगभग 60.6 अरब अमेरिकी डॉलर रह सकता है।' इसका मतलब है कि भारतीय सामानों को अब अमेरिका में बेचना महंगा हो जाएगा। जीटीआरआई ने निर्यात को बढ़ावा देने के लिए सरकार को कुछ सुझाव दिए हैं। इनमें ब्याज समानीकरण योजना को फिर से शुरू करना, हेल्पडेस्क बनाना, व्यापार समझौतों का सही तरीके से इस्तेमाल करना और नए निर्यातकों को शामिल करना शामिल है। इन सुझावों से निर्यात को बढ़ाने में मदद मिल सकती है। अमेरिका ने भारत पर जो 25% शुल्क लगाया है, वह चीन के बाद सबसे ज्यादा है। अमेरिका ने चीन पर 30%, वियतनाम पर 20%, बांग्लादेश पर 18%, इंडोनेशिया, मलेशिया और फिलीपींस पर 19% और जापान और दक्षिण कोरिया पर 15% टैरिफ लगाया है। इसका मतलब है कि भारत को अब अमेरिका में सामान बेचने में और भी मुश्किल होगी। जीटीआरआई के अनुसार, कुछ चीजों को छोड़कर टैरिफ से ज्यादातर क्षेत्रों में भारतीय निर्यात को नुकसान होगा। अमेरिका की नई टैरिफ व्यवस्था में दवा, ऊर्जा उत्पाद, महत्वपूर्ण खनिज और सेमीकंडक्टर शामिल नहीं हैं। इसका मतलब है कि इन क्षेत्रों में निर्यात पर कोई असर नहीं पड़ेगा। मूडीज रेटिंग्स ने भी इसे लेकर अपनी राय दी है। मूडीज रेटिंग्स का कहना है कि अमेरिकी बाजार तक सीमित पहुंच से भारत के मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर में ग्रोथ की संभावनाएं कम होंगी। इसका मतलब है कि भारत में चीजें बनाने वाली कंपनियों को नुकसान हो सकता है। मूडीज रेटिंग्स के सीनियर वाइस प्रेसडिंट क्रिश्चियन डी गुजमैन ने कहा कि भारतीय वस्तुओं पर निर्धारित टैरिफ एशिया-प्रशांत क्षेत्र के अन्य प्रमुख निर्यातकों की तुलना में काफी ज्यादा है। इनमें से कई देशों की शुल्क दरें 15 फीसदी से 20 फीसदी के बीच हैं। इसका मतलब है कि भारत को दूसरे देशों के मुकाबले ज्यादा नुकसान होगा। उन्होंने आगे कहा, 'विश्व की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था तक सीमित पहुंच से भारत के मैन्यूफैक्चरिंग सेक्टर, विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स जैसे ऊंचे मूल्यवर्धित क्षेत्रों के लिए बढ़ने की संभावना कम होगी।' इसका मतलब है कि इलेक्ट्रॉनिक्स जैसी चीजों को बनाने वाली कंपनियों को ज्यादा नुकसान होगा।

अमेरिका को भारत की जरूरत...डील के लिए ट्रंप का तमाशा, एक्सपर्ट ने बताया अंदर क्या चल रहा है

एजेंसी नई दिल्ली

मार्सेलस इन्वेस्टमेंट मैनेजर्स के संस्थापक सौरभ मुखर्जी ने बड़ी बात कह दी है। उनके मुताबिक, भारत और अमेरिका के बीच अगले कुछ महीनों में एक व्यापार समझौता हो जाने की उम्मीद है। टैरिफ को लेकर चिंता करने की कोई जरूरत नहीं है। उनकी यह भविष्यवाणी कई मायनों में बेहद महत्वपूर्ण है। खासतौर से इस बात को देखते हुए कि अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने भारत पर 25% टैरिफ लगाने का ऐलान किया है। रूसी तेल की खरीद को लेकर भी उन्होंने भारत से नाराजगी जाहिर की है। एक्सपर्ट के मुताबिक, इसके बावजूद भारत की स्थिति बहुत मजबूत है। अमेरिका ने भले भारत पर 25% टैरिफ लगाया है। लेकिन, इसका असर भारत के फार्मास्यूटिकल्स,इलेक्ट्रॉनिक्स और आईटी जैसे महत्वपूर्ण निर्यात पर पड़ने की आशंका कम है। उन्होंने इशारा किया यह पूरा तमाशा भारत पर दबाव बनाने की कोशिश है ताकि अमेरिका के पक्ष में ज्यादा फेवरेबल डील की जा सके। सौरभ मुखर्जी ने एनडीटीवी प्रॉफिट के साथ बातचीत में मौजूदा स्थितियों पर चर्चा की। उनका तर्क है कि अमेरिका को दो मुख्य क्षेत्रों में भारत की जरूरत है। इनमें इलेक्ट्रॉनिक्स और फार्मास्यूटिकल्स शामिल हैं। ऐपल जैसी कंपनियां भारत में मैन्युफैक्चरिंग

बढ़ा रही हैं। अमेरिका अपनी दवा सामग्री (APIs) की सप्लाई के लिए चीन पर निर्भरता कम करना चाहता है। इसके लिए भारत मजबूत विकल्प है। मुखर्जी मानते हैं कि मार्केट में किसी भी तरह की गिरावट को खरीदने के अवसर के रूप में देखा जाना चाहिए। उनकी फर्म इसी रणनीति के अनुसार, निवेश कर रही है। उनका कहना है कि अमेरिका के लिए वियतनाम जैसे देश भारत का विकल्प नहीं हो सकते। कारण है कि उनमें बड़े पैमाने पर उत्पादन करने की क्षमता नहीं है। एक्सपर्ट के अनुसार, अमेरिका की ओर से 25% टैरिफ बढ़ाने का असर भारत के महत्वपूर्ण निर्यात जैसे फार्मा, इलेक्ट्रॉनिक्स और IT पर नहीं होगा। टेक्सटाइल और ऑटो जैसे कुछ क्षेत्रों पर ही सीमित असर पड़ेगा। उन्होंने कहा, 'अगर यह 25% टैरिफ लागू भी होता है तो भी फार्मा, इलेक्ट्रॉनिक्स और IT को पूरी तरह से छूट मिलने की संभावना है।' मार्सेलस का मानना है कि बाजार में किसी भी तरह की गिरावट खरीदारी का अच्छा मौका है। उन्होंने कहा, 'अगर सोना कॉमस्टार या दिविस लैब्स जैसी कंपनियों के शेयर गिरते हैं तो हम और खरीदने के बारे में सोचेंगे।' उनकी फर्म की ग्लोबल स्ट्रैटेजी अमेरिका के टैरिफ की धमकियों के बाद बाजार में आने वाली गिरावट का फायदा उठाने की है। इसे वह मजाक में TACO यानी 'ट्रंप ऑलवेज चिकन्स आउट' ट्रेड कहते हैं। मुखर्जी ने कहा कि टैरिफ के अलावा अमेरिका को इलेक्ट्रॉनिक्स और फार्मास्युटिकल्स जैसे दो महत्वपूर्ण क्षेत्रों में भारत की बहुत ज्यादा जरूरत है। उनके मुताबिक, ऐपल एक स्टार खिलाड़ी है। ऐपल का भारत में मैन्युफैक्चरिंग बढ़ाना काफी अहम है। मुखर्जी के अनुसार, अमेरिका भारत के बाजारों को अमेरिकी कृषि और डेयरी उत्पादों के लिए खोलने का दबाव बना रहा है। इस मामले में भारत का लंबे समय से विरोध है। फिर भी उन्हें भरोसा है कि अगले कुछ महीनों में एक समझौता हो जाएगा। मार्सेलस इसी के अनुसार तैयारी भी कर रही है। फर्म के स्मॉल-कैप पोर्टफोलियो में दिविस लैब्स और एक्यूटस (पूर्व में अमी ऑर्गेनिक्स) शामिल हैं। इलेक्ट्रॉनिक्स के क्षेत्र में मुखर्जी ने कहा कि डिक्सन जैसी कंपनियां उनकी नजर में हैं।

INS अजय, INS निस्तार... समंदर में भारत की गर्जना, `मेक इन इंडिया' ने कैसे बदली तस्वीर दुनिया हैरान

एजेंसी नई दिल्ली

वक्त बदल गया है। उसके साथ भारत भी। आज देश अपनी रक्षा जरूरतों को पूरा करने के लिए विदेशी मुल्कों पर निर्भर नहीं है। कभी युद्धपोत और दूसरे बेहद अहम सैन्य हथियार बाहर से इम्पोर्ट होते थे। लेकिन, ' मेक इन इंडिया ' और 'आत्मनिर्भर भारत' जैसी पहलों ने सीन बदल दिया है। आज भारत अपनी ही सरजमीन पर अत्याधुनिक युद्धपोत बना रहा है। ये देश की रक्षा आत्मनिर्भरता को नई ऊंचाइयों पर ले जा रहे हैं। स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (SAIL) जैसी कंपनियों की इसमें बहुत बड़ी भूमिका है। इनके बगैर स्वदेशी युद्धपोतों को घर में ही बनाने का सपना सिर्फ सपना ही रहता। सेल देश की सबसे बड़ी स्टील बनाने वाली कंपनी है। इसने 'स्वदेशीकरण' में अहम किरदार अदा किया है। सेल अब भारतीय नौसेना के लिए खास ग्रेड का स्टील बना रही है। इसे पहले विदेश से आयात करना पड़ता था। इस स्टील का इस्तेमाल अब देश में ही युद्धपोत बनाने के लिए हो रहा है। सेल ने दो महत्वपूर्ण युद्धपोतों INS अजय और INS निस्तार के लिए खास स्टील की सप्लाई की। INS अजय एंटी-सबमरीन वारफेयर शैलो वाटर क्राफ्ट है। इसे गार्डन रीच शिपबिल्डर्स एंड इंजीनियर्स लिमिटेड (जीआरएसई) ने बनाया है। सेल ने इसके लिए जरूरत की पूरी डीएमआर ग्रेड स्टील प्लेट्स की सप्लाई की है। यह स्टील युद्धपोत की स्ट्रक्चरल मजबूती और स्टील्थ क्षमताओं के लिए बेहद जरूरी है। INS अजय ऐसे आठ स्वदेशी जहाजों में से है, जिनकी मैन्यूफैक्चरिंग भारत में हुई है। INS निस्तार की बात करें तो यह भारत का पहला स्वदेशी रूप से डिजाइन और निर्मित डाइविंग सपोर्ट वेसल (DSV) है। इसे हिंदुस्तान शिपयार्ड लिमिटेड (एचएसएल) ने कमीशन किया है। सेल ने इसके लिए भी विशेष ग्रेड प्लेट्स की पूरी मात्रा सप्लाई की है। यह पोत पनडुब्बी बचाव और गहरे समंदर में गोताखोरी जैसे महत्वपूर्ण कामों में मदद करेगा। ये दोनों युद्धपोत उदाहरण हैं। इनसे साफ है कि भारत अब न केवल युद्धपोत बना रहा है, बल्कि इनके लिए जरूरी कच्चे माल, जैसे विशेष ग्रेड के स्टील का भी उत्पादन कर रहा है। यह महत्वपूर्ण बदलाव है जो हमारी रक्षा तैयारियों को मजबूत कर रहा है।

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक दयाराम दिव्य द्वारा मुद्रक वेदांत प्रभाकर, मेधा कम्प्यूटर्स एंड ऑफसेट प्रिंटर्स, ऑफिस नं. 128, वार्ड नं. 25, नंदभवन कांवाखेड़ा पार्क के पास, भीलवाड़ा 311001 (राज.) से मुद्रित एवं एस-20, प्रतापनगर, भीलवाड़ा (राज.) से प्रकाशित। संपादक दयाराम दिव्य 96949 57624, 87695 58132 * PRB एक्ट के तहत ख़बरों के चयन के लिए उत्तरदायी। सभी विवादों का न्यायिक क्षेत्र भीलवाड़ा होगा